उन्नीसवी शताब्दी के प्रथम वर्षों में उत्तर प्रदेश में ब्रिटिश भूमि-नीति

सुलेख चन्द्र गुप्ता

उत्तर प्रदेश में ब्रिटिश राज्य की स्थापना प्रधान रूप से सन १८०१ ई. में उस समय हुई जब अवध के नवाब ने अपने राज्य का लगभग आधा भाग ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया. इस भाग को उस समय सात ज़िलों में बांट दिया गया, जिनके नाम इस प्रकार थे: इलाहाबाद, गोरखपुर, मुरादाबाद, बरेली, इटावा, फरुखाबाद तथा मैनपुरी.[१] इसके पश्चात सन १९०३ ई. में लार्ड लेक ने दौलतराव सिंधिया को हराकर वर्तमान उत्तर प्रदेश के पश्चिमी इलाकों को भी ब्रिटिश राज्य के अन्तर्गत ले लिया और इस क्षेत्र को चार ज़िलों में बांट दिया गया जिनके नाम थे मेरठ, अलीगढ़, उत्तर सहारनपुर तथा दक्षिण सहारनपुर.[२] इसके अतिरिक्त पेशवा से सन्धि के अनुसार बुन्देलखण्ड के कुछ ज़िले भी ब्रिटिश आधिपत्य में आ गए. उत्तर प्रदेश के इन हिस्सों को उस समय की ब्रिटिश राज्यप्रणाली के अनुसार सीडेड एण्ड कॉन्कर्ड प्रदेश (Ceded and Conquered Provinces) कहा जाता था.

उत्तर प्रदेश के इन भागों में ब्रिटिश सरकार की भूमि-नीति का इतिहास कुछ निराला ही है जो बंगाल तथा मद्रास की भूमि-नीति के इतिहास से काफी भिन्न है. उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम बीस वर्षों में उत्तर प्रदेश के इन भागों की ब्रिटिश भूमि-नीति में कई बार अत्यन्त क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए, जिनका प्रभाव उत्तर प्रदेश की भूमि-व्यवस्था पर काफी गहरा पड़ा. भूमिनीति के इन परिवर्तनों तथा उनके कारणों पर कुछ प्रकाश डालना ही इस लेख का मूल उद्देश्य है.

उत्तर प्रदेश की भूमि-नीति की पृष्ठ भूमि, बंगाल की भूमि-नीति:

सबसे पहले इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि जिस समय ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उत्तर प्रदेश के इस भाग में राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली उस समय ब्रिटिश सरकार ने भूमि-व्यवस्था की ओर अपना दृष्टिकोण बना लिया था. वह दृष्टिकोण बंगाल की भूमि-व्यवस्था के लिए लागू किए गए कानूनों में पूर्ण रूप से प्रचलित था, जिनको स्थायी बन्दोबस्त (Permanent Settlement) के नाम से पुकारा जाता है. इस भूमि-व्यवस्था का मूल उद्देश्य बंगाल में जमींदारी प्रथा का प्रचलन करना था जिसके द्वारा ब्रिटिश सरकार केवल अपने राजनीतिक ही नहीं वरन् आर्थिक हितों का भी पालन करना चाहती थी.

१. उत्तर प्रदेश के इन्हीं नामों के आधुनिक ज़िलों का क्षेत्र उस समय की अपेक्षा बहुत कम है, क्योंकि उनमें से अब अन्य कई ज़िले और बना दिये गये हैं. उस समय के इन ज़िलों के वर्गक्षेत्र के अनुसार इन भागों में आजकल के उत्तर प्रदेश का लगभग दो तिहाई भाग सम्मिलित था.

२. पिछला नोट देखिए.